डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय- संस्कृत,
बी॰ए॰ स्नातक, सेमेस्टर - I

संज्ञा प्रकरण

व्यञ्जन भेद

व्यञ्जनों के भी कई भेद होते हैं - 'क' से लेकर 'म' पर्यन्त (अर्थात् कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग) वर्णों को 'स्पर्श' कहते हैं। य, र, ल, व- इन चार को 'अन्तःस्थ' तथा श, ष, स और ह को 'ऊष्म' कहते हैं।

वर्णों का स्थान-

उच्चारण करते समय भीतर से आती हुई श्वास को मुख के अवयव विशेषों से (और कभी कभी नासिका से भी) विकृत करके निकाला जाता है। जिन-जिन अवयवों से विकार उत्पन्न किया जाता है, उनको वर्णों का 'स्थान' कहते हैं। संस्कृत वर्णों के स्थान इस प्रकार हैं-

1. अकुहविसर्जनीयाः कण्ठ्याः।
   अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, विसर्ग - कण्ठ
2. इचुयशानां तालु।
   इ, च, छ, ज, झ, ञ, य, श - तालु
3. ऋटुरषाः मूर्धन्याः।
   ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष - मूर्धा
4. लृतुलसाः दन्त्याः।
   लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स - दन्त
5. उपूपध्मानीयाः ओष्ठ्याः।
   उ, प, फ, ब, भ, म, ≍ प, ≍ फ - ओष्ठ
6. ञमङणनानां नासिक्याः।
   ञ, म, ङ, ण, न के उच्चारण में नासिका का भी प्रयोग होता है।

7. एदैतौ कण्ठतालव्यौ ।
एे, ऐ — कण्ठतालु
8. ओदौतौ कण्ठोष्ठ्यौ ।
ओ, औ — कण्ठोष्ठ
9. वकारो दन्तोष्ठ्यौ
व — दन्तोष्ठ
10. ≍क, ≍ख — जिह्वामूल
11. अनुस्वार — नासिका

वर्णो का प्रयत्न —

वर्णों के उच्चारण में जो चेष्टा करनी पड़ती है, उसे प्रयत्न कहते हैं। यह प्रयत्न दो प्रकार का होता है। 1. आभ्यन्तर प्रयत्न और 2. बाह्य प्रयत्न।

वर्ण के मुख से बाहर निकलने के पहले ही मुख के भीतर जो यत्न होता है, उसे 'आभ्यन्तर प्रयत्न' कहते हैं।
'बाह्य प्रयत्न' उस यत्न को कहते हैं जो मुख से वर्ण निकालते समय होता है।

1. आभ्यन्तर प्रयत्न —

यह पाँच प्रकार का होता है। स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत।

2. बाह्य प्रयत्न —

यह 11 प्रकार का होता है — विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। वर्णों के आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्न को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं —

आभ्यन्तरप्रयत्न बोधक चक्र

स्पृष्ट	ईषत्स्पृष्ट	विवृत	ईषद्विवृत	संवृत
क, ख, ग, घ, ङ	य	अ, ए	श	प्रयोग में ह्रस्व 'अ'
च, छ, ज, झ, ञ	र	इ, ओ	ष	
ट, ठ, ड, ढ, ण	ल	उ, ऐ	स	
त, थ, द, ध, न	व	ऋ, औ	ह	
प, फ, ब, भ, म		लृ		

बाह्यप्रयत्न बोधक चक्र

विवार, श्वास, अघोष,	संवार, नाद, घोष	अल्पप्राण	महाप्राण	उदात्त, अनुदात्त, स्वरित
क ख श	ग, घ, ङ, य	क, ग, ङ, य	ख, घ, श	अ, ए
च छ ष	ज, झ, ञ, व	च, ज, ञ, व	छ, झ, ष	इ, ओ
ट ठ स	ड, ढ, ण, र	ट, ड, ण, र	ठ, ढ, स	उ, ऐ
त थ	द, ध, न, ल	त, द, न, ल	थ, ध, ह	ऋ, औ
प फ	ब, भ, म, ह	प, ब, म	फ, भ	लृ

॥ इति ॥